Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 18

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

4 मई 2017 ई 7 शअबान 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अपनी पांचों समय की नमाज़ों को ऐसे भय और तल्लीनता से पूरा करो कि जैसे तुम ख़ुदा तआला को देख रहे हो और अपने रोज़ों (उपवासों) को ख़ुदा के लिए पूरी सच्चाई के साथ पूरा करो। प्रत्येक जो ज़कात देने के योग्य है वह ज़कात दे और जिस पर हज का दायित्व आ चुका है और इस्लामी सिद्धान्तों को देखते हुए कोई बाधा या रोक नहीं वह हज करे।

तुम ख़ुदा की अन्तिम जमाअत हो। अत: ऐसे सुकर्म करो जो अपने गुणों के लिहाज़ से सर्वोत्तम हों।

देखो मैं बड़ी प्रसन्नता से यह संदेश देता हूँ कि तुम्हारा ख़ुदा वास्तव में विद्यमान है, यद्यपि कि सब को उसी ने पैदा किया है, पर वह उस मनुष्य को चुन लेता है जो उस को चुनता है। वह उसके निकट आ जाता है जो उसके निकट आता है, जो उसे सम्मान देता है वह उसको भी सम्मान देता है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"अत: वे समस्त लोगो ! जो स्वयं को मेरी जमाअत में शामिल करते हो आसमान पर तुम उस समय मेरी जमाअत में शुमार किए जाओगे, जब वास्तव में तक्वा (सदाचार) के मार्गों पर चलोगे। अत: अपनी पांचों समय की नमाज़ों को ऐसे भय और तल्लीनता से पूरा करो कि जैसे तुम ख़ुदा तआला को देख रहे हो और अपने रोज़ों (उपवासों) को ख़ुदा के लिए पूरी सच्चाई के साथ पूरा करो। प्रत्येक जो ज़कात देने के योग्य है वह ज़कात दे और जिस पर हज का दायित्व आ चुका है और इस्लामी सिद्धान्तों को देखते हुए कोई बाधा या रोक नहीं वह हज करे। भलाई को अच्छे रंग में करो, बुराई की उपेक्षा करते हुए उसे छोड़ दो। नि:सन्देह स्मरण रखो कि तक्वा (सदाचार) रहित कोई भी कर्म ख़ुदा तक नहीं पहुंच सकता। प्रत्येक भलाई की जड़ तक्वा (सदाचार) है। जिस कर्म में यह जड़ नष्ट नहीं होगी वह कर्म भी व्यर्थ नहीं जाएगा। अनिवार्य है कि शोक और विपत्तियों से तुम्हारी परीक्षा भी हो, जिस प्रकार तुम से पूर्व ख़ुदा पर आस्था रखने वालों की परीक्षा हुई। अत: सावधान रहो। ऐसा न हो कि ठोकर खाओ। धरती तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती यदि तुम्हारा आकाश से अटूट नाता है। तुम जब भी अपना नुकसान करोगे तो अपने ही हाथों से करोगे न कि शत्रु के हाथों से। यदि तुम्हारा सांसारिक सम्मान पूर्णतया जाता रहे तो ख़ुदा तुम्हें आकाश पर वह सम्मान प्रदान करेगा जो कभी कम न हो। अत: तुम ख़ुदा को मत छोड़ो। आवश्यक है कि तुम्हें दु:ख दिया जाए और तुम्हारी अनेकों आशाओं पर पानी फिर जाए। पर इन समस्त परिस्थितियों में तुम निराश मत हो, क्योंकि तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारी परीक्षा लेता है कि तुम उसके मार्ग में दृढ़ हो या नहीं। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर फ़रिश्ते भी तुम्हारी प्रशंसा करें तुम मार खाओ और प्रसन्न रहो, गालियां सुनो और आभार प्रकट करो, असफलता देखो पर ख़ुदा से नाता मत तोड़ो। तुम ख़ुदा की अन्तिम जमाअत हो। अत: ऐसे सुकर्म करो जो अपने गुणों के लिहाज़ से सर्वोत्तम हों। प्रत्येक जो तुम में आलसी हो जाएगा वह एक अपवित्र वस्तु की भांति जमाअत से बाहर फेंक दिया जाएगा और हसरत से मरेगा पर ख़ुदा का कुछ न बिगाड़ सकेगा। देखो मैं बड़ी प्रसन्नता से यह संदेश देता हूँ कि तुम्हारा ख़ुदा वास्तव में विद्यमान है, यद्यपि कि सब को उसी ने पैदा किया है, पर वह उस मनुष्य को चुन लेता है जो उस को चुनता है। वह उसके निकट आ जाता है जो उसके निकट आता है, जो उसे सम्मान देता है वह उसको भी सम्मान देता है।

तुम अपने हृदयों को सीधा कर के, मुख, नेत्र और कानों को पवित्र करके ख़ुदा की ओर आ जाओ कि वह तुम्हें स्वीकार करेगा। आस्थानुसार ख़ुदा जो तुमसे चाहता है वह यही है कि वह एक और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके नबी हैं और वह समस्त नबियों की मुहर और सर्वश्रेष्ठ हैं। अब उसके बाद कोई नबी नहीं परन्तु वही जिस को प्रतिबिम्ब स्वरूप मुहम्मद के रंग की चादर पहनाई गई, क्योंकि सेवक अपने स्वामी से अलग नहीं और न शाखा अपने तने से अलग है। अत: जो पूर्ण रूप से अपने आक़ा की आज्ञाकारिता में लीन होकर ख़ुदा से नबी का नाम पाता है वह ख़त्मे नुबुव्वत में बाधक नहीं। जिस प्रकार तुम दर्पण में अपनी शक्ल देखो तो तुम दो नहीं हो सकते बल्कि एक ही रहोगे, यद्यपि कि सामान्यत: दो दिखाई देते हैं। अन्तर केवल मूल और छाया का है। ऐसा ही ख़ुदा ने मसीह मौऊद के सन्दर्भ में चाहा। यही भेद है कि हज़रत मुहम्मद साहिब फ़रमाते हैं कि मसीह मौऊद मेरी क़ब्र में दफ़्न होगा अर्थात वह मैं हूँ। इसमें दो रंगी नहीं आई। निसन्देह तुम समझ लो कि ईसा इब्ने मरयम मर चुका है। कश्मीर श्रीनगर मुहल्ला ख़ानियार में उसकी क़ब्र है। ख़ुदा ने अपनी पवित्र किताब में उसकी मृत्यु की सूचना दी है।"

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 19, पृष्ठ 15)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी तथा संक्षिप्त इतिहास एवं धार्मिक सेवाऐं (अन्तिम भाग-6)

अनुवादक : शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, कादियान

अन्तिम यात्रा लाहौर तथा वफ़ात

हुज़ूर अपने घर वालों के साथ 27 अप्रैल 1908 ई. को लाहौर चले गए। वहाँ पर हुज़ूर ने कई भाषण दिए। विभिन्न धर्मों के लोगों को मुलाकात का अवसर प्रदान किया। एक पुस्तिका ''पैग़ाम सुलह" (सन्धि तथा शान्ति का संदेश) के नाम से लिखी। अभिप्राय यह कि दिन रात प्रचार तथा तरबिय्यत के कामों में लगे रहे। इसी बीच लगातार हुज़ूर को अपनी वफ़ात के बिल्कुल समीप आ जाने के बारे भी इल्हाम होते रहे। अत: 20 मई को इलहाम हुआ - ''अर्रहीलो सुम्मर्रहीलो वल मौतो क़रीबुन"। अर्थात कूच (जाने) का समय आ गया है तथा मौत निकट है।

25 तथा 26 मई 1908 ई. को बीच की रात को 11 बजे के लगभग हुज़ूर बीमार हो गए तथा हर संभव इलाज करने के बावजूद हालत संभल न सकी। अन्तत: 26 मई को साढ़े दस बजे के लगभग हुज़ूर वफ़ात पा कर अपने सच्चे मौला के पास पहुँच गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन ।

अन्तिम समय में आपकी मुबारक ज़बान पर से जो शब्द सुने गए वह यह थे :-

''अल्लाह ! मेरे प्यारे अल्लाह !"

वफ़ात के समय इल्हाम के अनुसार हुज़ूर की आयु शमसी (सूर्य के) हिसाब से 74 वर्ष तथा क़मरी (चाँद के) हिसाब से 76 वर्ष थी।

अत्याधिक दु:ख तथा विरोध

यद्यपि हुज़ूर को एक लम्बे समय से अपनी वफ़ात के बारे इलहाम हो रहे थे तथा वफ़ात के निकट तो बहुत ही इल्हाम हो रहे थे। पर क्योंकि हुज़ूर बिल्कुल थोड़ी सी बीमारी के बाद अचानक वफ़ात पा गए। इस लिए जमाअत को अत्याधिक दु:ख पहुँचा। अन्य मुसलमानों ने तथा ग़ैर मुस्लिम सभ्य लोगों ने भी हुज़ूर की वफ़ात पर हार्दिक दु:ख प्रकट किया तथा सहानुभूति प्रकट करते हुए हुज़ूर के गुणों का खुले दिल से प्रकटन किया। अत: कई अख़बारों ने आपको इस्लाम का एक विजयी जरनैल, इस्लाम का वीर पहलवान, अत्यन्त नेक तथा पवित्र तथा इसराईल के नबियों के समान बुज़ुर्ग माना। परन्तु जो तंगदिल लोग अहमदियत से शत्रुता रखते थे उन्होंने भी इस अवसर पर अपनी शत्रुता तथा द्वेष को प्रकट करने में कोई कमी न की। अत: उन्होंने उस मकान के निकट जहाँ हुज़ूर ने वफात पाई थी, अहमदियों का दिल दुखाने के लिए जलूस निकाले, गालियाँ दीं तथा बड़ी गन्दी हरकतें कीं। जिन्हें अहमदियों ने बड़े सब्र (धैर्य) के साथ सहन किया।

ख़िलाफ़त का चुनाव तथा तदफ़ीन

हुज़ूर का जनाज़ह रेल द्वारा बटाला लाया गया जहाँ से लोग अपने कन्धों पर उठा कर क़ादियान लाए। (बटाले से आगे उस समय रेल नहीं आती थी) 27 मई 1908 ई. को जनाज़े से पहले जमाअत अहमदिया ने बिल्कुल निर्विवाद हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो को ख़लीफ़तुल मसीहिल अव्वल (प्रथम ख़लीफ़ा) चुन लिया तथा आप के हाथ पर बैअत करके फिर एक हाथ पर एकत्र हो गई और इस प्रकार पुस्तिका ''अल-वसिय्यत" में हज़रत मसीह मौऊद ने ख़िलाफ़त की जो शुभ सूचना दी थी वह पूरी हो गई। और जो लोग यह समझते थे कि शायद अब यह जमाअत सदा के लिए समाप्त हो जाएगी। उनका यह विचार बिल्कुल ग़लत साबित हुआ यद्यपि जमाअत ने स्वयं ख़लीफ़ा का चुनाव किया परन्तु यह ईमान है कि ख़लीफ़ा वास्तव में ख़ुदा तआला स्वयं बनाता है। और इसके लिए मोमिनों के दिलों में विचार प्रदान करता है। (अर्थात उनका मार्ग दर्शन स्वयं करता है।) अत: हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो को जो कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुराने तथा विशेष साथियों में से थे। ख़ुदा तआला ने स्वयं ख़लीफ़ा बनाया तथा इस प्रकार आप रज़ियल्लाहो अन्हो के हाथ पर जमाअत को एकत्रित कर दिया।

ख़िलाफ़त के चुनाव के बाद हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नमाज़ जनाज़ह पढ़ाई। लोगों ने जो कि हज़ारों की संख्या में आए हुए थे अपने महबूब और प्यारे आक़ा (स्वामी) के अन्तिम दर्शन किए जिसके बाद हुज़ूर के पवित्र शरीर को 27 मई 1908 ई. को छ: बजे सांय मक़बरा बहिश्ती क़ादियान में दफ़न कर दिया गया। और इस प्रकार वह महान व्यक्ति सदा के लिए हमारी आँखों से ओझल हो गया जिसकी शुभ सूचना स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को दी थी और जिसके द्वारा इस ज़माने में इस्लाम की उन्नति होनी शुरू है।

आपका पवित्र हुलिया (मुखाकृति)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मर्दाना सुन्दरता का उत्तम नमूना थे । शरीर न अधिक दुबला था न मोटा था। क़द मध्यम था। कन्धे तथा छाती विस्तृत। रंग सफ़ेदी लिए हुए गेहूँआ था। मुख पर हमेशा एक विशेष प्रकार के नूर, आनंद, और चमक की झलक रहती थी। सिर के बाल बहुत बारीक सीधे तथा चमकदार थे। दाढ़ी घनी परन्तु बहुत सुन्दर थी। आँखें कालापन लिए शर्बती रंग की थीं। और सदा नीचे की ओर झुकी रहतीं। पेशानी (माथा) सीधी, ऊँची और चौड़ी थी और उससे अत्यन्त प्रतिभा और प्रवीणता टपकती थी। पहरावा बहुत सादा होता था अर्थात कुर्ता या कमीज़, पाजामा, सदरी, कोट और पगड़ी होती थी। पाँव में देसी जूती पहनते थे। बाहर जाते समय हाथ में असा (सोटी) अवश्य रखते थे। खाना बहुत सादा था। और खाना बहुत कम और धीरे-धीरे खाते थे ।

हुज़ूर की आदतें तथा सद्व्यवहार

हुज़ूर की आदतों तथा व्यवहार में निम्न बातें विशेष रूप से दिखाई देती थीं ।

1. हुज़ूर को अल्लाह तआला की हस्ती (अस्तित्व) पर तथा अपने दावे की सच्चाई पर पूरा विश्वास था तथा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अत्यन्त प्रेम रखते थे।

2. ईश्वर भक्ति में हर समय लीन रहते थे। देखने में जब आप सांसारिक काम भी करते तो धीरे धीरे अल्लाह तआला की तसबीह (याद) करते रहते। वास्तव में आप का सारा जीवन ही साक्षात ईश्वर भक्ति था।

3. तक़वा (संयम) सच्चाई और क़ुर्आन करीम के आदेशों और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेशों पर चलने पर सदा विशेष ध्यान रखते थे।

4. जीवन बहुत ही सादा और हर प्रकार के दिखावे से पाक था।

5. कठिन से कठिन हालातों का भी सब्र (धैर्य) दृढ़ता और वीरता के साथ मुक़ाबला करते थे।

6. परिश्रम करने की विशेष आदत थी। ख़ुदा तआला ने जो काम हुज़ूर को सौंपा था, दिन रात उसी में व्यस्त रहते थे।

7. पत्नी, बच्चों और मित्रों के साथ, यहाँ तक कि अपने शत्रुओं से भी बड़े ही प्रेम, नम्रता, और सहानुभूति का व्यवहार करते थे। और सदा उन के मन के भावों का ध्यान रखते थे। परन्तु साथ ही उनकी शिक्षा-दीक्षा का भी विशेष ध्यान रखते थे।

8. अतिथि सेवा भी आपका विशेष गुण था। मेहमानों के आराम का बहुत ही ध्यान रखते थे।

हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो ने हुज़ूर की आदतों और सद्व्यवहार का संक्षेप में बड़े ही सुन्दर परन्तु व्यापक रूप में वर्णन किया है। आप लिखते हैं :-

''हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने सद्व्यवहार में कामिल (दक्ष) थे। अर्थात आप अति नम्र और दयालू थे। दानवीर थे। अतिथि पूजक थे। ...विपत्तियों के समय जब लोगों के दिल बैठे जाते थे आप शेर के समान आगे बढ़ते थे। क्षमा, वदान्यता, अमानतदारी विनीत, सब्र व शुक्र, निस्पृहता, लज्जा, परिश्रम, संतोष, वफ़ादारी, सादगी, कृपा, अदबे इलाही (ख़ुदा का सम्मान) अदबे रसूल व बुज़ुर्गाने दीन (रसूल तथा धर्मात्माओं का सम्मान) शीलता, ज़िम्मेदारियों को पूरा करना, वचन पूरा करना, चुस्ती, सहानुभूति, गंभीरता, पवित्रता, विनोद और परिहास, हिम्मत उत्साह शीलता, स्वाभिमान, ख़ुदा और उसके रसूल का इश्क़ (प्रेम) रसूल का पूर्ण अनुसरण, यह संक्षिप्त आपके अख़लाक़ और आदात थे। मैं ने आपको उस समय देखा जब मैं दो वर्ष का बालक था। फिर आप मेरी आँखों से उस समय लुप्त हुए जब मैं सत्ताईस वर्ष का जवान था। पर मैं ख़ुदा की कसम (शपथ) खा कर ब्यान करता हूँ कि मैं ने आप से अधिक ख़लीक़ (शिष्ट) आपसे अधिक नेक, आप से अधिक बुज़ुर्ग, आप से अधिक अल्लाह और उसके रसूल के प्रेम में लीन कोई व्यक्ति नहीं देखा। आप एक नूर थे जो मानव जाति के लिए संसार में प्रकट हुआ।"

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

दुनिया में कोई व्यक्ति नहीं जो प्रत्येक बुराई से हर लिहाज़ से मुक्त हो। अल्लाह तआला का गुण सत्तार है जो हमें छुपाता है। अगर इंसान की ग़लतियों को, कमियों को, गुनाहों को दिखाया जाने लगे तो किसी को मुंह दिखाने के योग्य नहीं रहे। अल्लाह तआला जो बुराइयों को छुपाने वाला और गुनाहों को ढांपने वाला है उसने हमें यह दुआ भी हम पर उपकार करते हुए सिखाई है कि तुम जहां अपनी ग़लतियों और कमियों से बचने की कोशिश करो वहाँ इस्तिग़फार भी किया करो तो मैं तुम्हारे गुनाहों को भी माफ करूँगा तुम्हारे गुनाहों को छुपाउंगा। तुम्हारी दुआओं को स्वीकार करूंगा।

दोष देखकर बजाय दोष फैलाने के प्रत्येक को इस्तिग़फार करना चाहिए। अल्लाह तआला बेनियाज़ है और इस बात से डरना चाहिए कि हमारे अंदर भी जो अनगिनत दोष हैं वह कहीं प्रकट न हो जाएं। अगर नेक इरादे से व्यक्ति दूसरों की बुराइयों को छिपाए तो अल्लाह तआला फज़लों को प्राप्त करने वाला बनता है।

कभी किसी भी व्यक्ति को यह एहसास नहीं होना चाहिए कि मेरी कमज़ोरी अमुक अधिकारी के कारण प्रकट हुई। लोगों को पता लगा। अगर यह भावना पैदा हो तो उसकी प्रतिक्रिया बहुत अधिक सख्त होती है। जहां ऐसे लोग बुराई को फैला करके जिनके ज़िम्मा यह सुधार का काम है उन की बुराइयों को फैला करके समाज में बिगाड़ पैदा कर रहे हैं वहाँ अल्लाह तआला की नाराज़गी भी मोल ले रहे होते हैं।

अगर हम ने अल्लाह तआला के गुण सत्तारी से लाभ उठाना है तो ख़ुद भी दूसरों की सत्तारी की ज़रूरत है।

समाज की बुराइयों को दूर करने और शांति, प्यार और मुहब्बत का प्रसार करने के लिए आवश्यक है कि बुराइयों को छुपाया जाए और अच्छाइयों को प्रकट किया जाए। अच्छाइयों को प्रकट करने से दिखाने से नेकियों की भी तहरीक होती है। एक वास्तविक मुसलमान की भूमिका यही होनी चाहिए कि समाज में नेकियाँ फैलाए। केवल ज़बान के मज़ा और अस्थायी बनावटी खुशी के लिए या खुशी का माहौल बनाने के लिए दूसरों की बुराइयों को फैलाना बहुत बड़ा गुनाह है। किसी मजलिस में एक मज़ाक़ का रंग पैदा कर लोगों का मजाक करना यह बहुत बड़ा गुनाह है जिस से हर अहमदी को बचना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निकट किसी का अहमदी होना और आप की बैअत में आना यह दिखाता है कि अल्लाह तआला ने उसे स्वीकार कर लिया है और जब अल्लाह तआला ने उसे स्वीकार कर लिया है तो किसी दूसरे का अधिकार नहीं बनता कि व्यक्तिगत दोष तलाश करके उन्हें फैलाया जाए। टोह में लगा हो जिज्ञासा की जाए और फिर वह बुराईयां फैलाई जाएं या लोगों के सामने उस के बारे में घृणा व्यक्त भी करे।

कुरआन मजीद, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से दूसरों की कमज़ोरियों की टोह लगाने, तलाश करने और उन को फैलाने की बुरी आदत से बचने और सत्तारी से काम लेने और इस्तिग़फार की तरफ ध्यान देने की विशेष नसीहतें।

आदरणीय मलक सलीम अहमद साहिब एडवोकेट, सदर जमाअत ननकाना साहिब(पाकिस्तान) की शहादत, शहीद मरहूम का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 31 मार्च 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

दुनिया में कोई व्यक्ति नहीं जो प्रत्येक बुराई से हर लिहाज़ से मुक्त हो। अल्लाह तआला का गुण सत्तार है जो हमें छुपाता है। अगर इंसान की ग़लतियों को, कमियों को, गुनाहों को दिखाया जाने लगे तो किसी को मुंह दिखाने के योग्य नहीं रहे। अल्लाह तआला जो बुराइयों को छुपाने वाला और गुनाहों को ढांपने वाला है उसने हमें यह दुआ भी हम पर उपकार करते हुए सिखाई है कि तुम जहां अपनी ग़लतियों और कमियों से बचने की कोशिश करो वहाँ इस्तिग़फार भी किया करो तो मैं तुम्हारे गुनाहों को भी माफ करूँगा। तुम्हारे गुनाहों को छुपाउंगा। तुम्हारी दुआओं को स्वीकार करूंगा। प्रत्येक की बहुत सारी बुराइयों को अल्लाह तआला सामान्य रूप से तो छुपाता है। अल्लाह तआला की बख़्शिश विशेष रूप से उन लोगों को भी अपनी चादरों में लिपेटती है जो इस्तिग़फार करने वाले हैं। ग़फर का मतलब भी छुपाना और ढांकना होता है और यही मतलब लगभग सतर का है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि "इस्लाम ने जो ख़ुदा पेश किया है और मुसलमानों ने जिस ख़ुदा को स्वीकार किया है वह रहीम दयालु सहानुभूति करने वाला ,तौबा स्वीकार करने वाला और ग़फ्फार है। जो व्यक्ति सच्ची तौबा करता है अल्लाह तआला उसकी तौबा स्वीकार करता है और गुनाह बख्श देता है। फरमाया कि "लेकिन दुनिया में चाहे सगा भाई भी हो या कोई और क़रीबी प्रिय या रिश्तेदार हो वह जब एक बार ग़लती देख लेता है फिर वह इससे रुक भी जाए (अर्थात ग़लती करने वाला रुक भी जाए) मगर उसे अपराधी ही समझता है।" अत: दुनिया वाले किसी अगर कोई व्यक्ति गुनाह और किसी दोष को छोड़ भी दे तब भी उसे अपराधी और संदेह की नज़र से देखने वाले हैं। आपने फरमाया "लेकिन अल्लाह तआला कैसा दयालु है कि इंसान हज़ारों दोष देख कर के भी लौटता है तो बख्श देता है।" फरमाया "दुनिया में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है केवल पैग़म्बरों के" (जो ख़ुदा तआला रंग में रंगे जाते हैं।) जो अनदेखी से इस कदर काम ले।" (अर्थात सिवाय नबियों के इतनी अनदेखी करे जितनी ख़ुदा तआला करता है। ख़ुदा तआला के बाद नबी हैं जो इतना कर सकते हैं और इसके अतिरिक्त कोई नहीं करता) "बल्कि आमतौर पर तो यह हालत है कि जो सादी ने कहा है कि "ख़ुदा दानद बपो शद व हमसाया नदानद व बख़र अशद" (मल्फ़ूज़ात भाग7 पृष्ठ 178 प्रकाशन 1985 ई यू.के) कि ख़ुदा तआला तो जानते हुए भी छिपाता है लेकिन पड़ोसी थोड़ा ज्ञान हो जाए तो इस कमज़ोरी को प्रसिद्ध करने लग जाता है।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह सादी का जो शेर के गद्य का हवाला दिया है एक जगह उसकी व्याख्या इस तरह भी की है कि "ख़ुदा तआला का छुपाना ऐसा है कि वह आदमी के गुनाह और अपराधों को देखता है लेकिन अपनी इस

विशेषण के कारण उसकी कमज़ोरियों को तब तक जब तक कि वह मध्य सीमा से न गुज़र जाए ढांपता है लेकिन इंसान किसी दूसरे की ग़लती देखता भी नहीं और शोर मचाता है।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 299.300 प्रकाशन 1985 ई यू के)

आप फरमाते हैं। "अत: विचार करो कि उसके कर्म और दया का कैसा भव्य गुण है।" आप अल्लाह तआला के बारे में फरमाते हैं कि "अगर वह (अर्थात अल्लाह तआला) बदला लेने पर आए तो सब को तबाह कर दे लेकिन उसका उपकार और दया बहुत ही व्यापक है और क्रोध पर प्राथमिकता रखता है।"

(मल्फूज़ात भाग 7 पृष्ठ 179 प्रकाशन 1985 ई यू के)

अत: अगर इस बात को हम समझ लें और अपने साथियों अपने भाइयों अपने से सम्बन्ध पड़ने वालों के मामलों में हर समय टोह न लगाते फिरें जिज्ञासा न करें। उनकी कमज़ोरियों को खोजते न फिरें तो एक प्यार और मुहब्बत करने वाला और शांतिपूर्ण समाज स्थापित हो सकता है। हम में से कई ऐसे हैं जो बुराइयों को छुपाने के स्थान पर दूसरों के दोष दिखाने की कोशिश में होते हैं और जब उनके अपने बारे में कोई बात करे या किसी माध्यम से उन्हें यह पता चल जाए कि अमुक व्यक्ति ने मेरे बारे में इस तरह बात की थी तो अत्यधिक क्रोध में आ जाते हैं बहुत ग़ुस्सा में आकर मरने मारने पर उतारू हो जाते हैं लेकिन जब यह खुद एक दूसरे के बारे में कह रहे हों तो उस समय कहते हैं कि यह तो मामूली बात थी हम ने तो यूं ही कह दी। हमें हर समय आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह फरमान अपने सामने रखना चाहिए कि जो अपने लिए चाहते हो वही अपने भाई के लिए चाहो।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल ईमान हदीस 13)

अत: अगर अपने लिए बुराइयों को छुपाना पसंद है तो दूसरों के लिए भी वही भावनाएं होनी चाहिए और यही वह सुनहरा नियम है जो समाज की शांति के लिए भी आवश्यक है।

अत: दोष देखकर बजाय दोष फैलाने के प्रत्येक को इस्तिग़फार करना चाहिए। अल्लाह तआला बेनियाज़ है और इस बात से डरना चाहिए कि हमारे अंदर भी जो अनगिनत दोष हैं वह कहीं प्रकट न हो जाएं। अगर नेक इरादे से व्यक्ति दूसरों की बुराइयों को छुपाए तो अल्लाह तआला के फज़्लों को प्राप्त करने वाला बनता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि अगर ख़ुदा तआला हिसाब लेने लगे तो सब को तबाह कर दे। अत: बड़े भय का स्थान है और हर समय इस्तिग़फार करते रहने की तरफ ध्यान देने की जरूरत है।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फरमाया कि जिसने अपने मुसलमान भाई के किसी दोष को छुपाया अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस के दोष को ढक देगा उसकी बुराइयों को छुपाएगा उसे ढक देगा और रहम फरमाएगा और जो अपने किसी मुसलमान भाई की बुराइयां प्रकट करता है उसकी बुराई को देख कर लोगों को बताता फिरता है अल्लाह तआला उसके दोष और नंगेपन को इसी तरह प्रदर्शित करेगा कि उसके घर में उसे बदनाम कर देगा।

(सुनन इब्ने माजा किताबुल हुदूद हदीस 2546)

अत: यह बहुत बड़ी चेतावनी है भय का स्थान है। अल्लाह तआला की कृपा को ग्रहण करने के लिए हमेशा दूसरों के दोष देखने के स्थान पर अपने पर नज़र रखनी चाहिए तभी हम अल्लाह तआला की दया और फज़्ल को ग्रहण कर सकते हैं।

लोग कह देते हैं कि अगर हम किसी को देखकर बुराई प्रकट नहीं करेंगे तो सुधार कैसे होगा। हमेशा याद रखना चाहिए कि अगर किसी की कोई बुराई जमाअत की प्रणाली को नुकसान पहुंचाने का माध्यम बन रही है या समाज के एक वर्ग को भी अपनी चपेट में लेकर ख़राब कर रही है तो सुधार के लिए जो लोग निर्धारित हैं अमीर जमाअत है, जमाअत के अंदर सदर जमाअत है, उन तक बात पहुंचा दें या मुझे लिख दें ताकि सुधार की ओर ध्यान हो। अल्लाह तआला भी नहीं चाहता कि उसकी बनाई हुई जमाअत की प्रणाली ख़राब हो। वह नहीं चाहता कि व्यक्ति गत बुराई सामाजिक बुराई बन जाए। इसलिए अल्लाह तआला ऐसे लोगों की बुराई प्रकट कर देता है। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "जो इस बात पर कायम रहते हैं और ज़िद्द करते हैं कि जो गुनाह उन्होंने किया है या त्रुटियाँ की हैं उन्हें फैलाना है और प्रकट भी करना है या करते चले जाना है जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि आदमी के गुनाहों और अपराधों को अल्लाह तआला देखता है लेकिन अपने गुण के कारण भूल करने वालों को तब तक कि सीमा से निकल न जाएं ढांपता है। अत: जब मनुष्य स्वयं ही अपने आप को व्यक्त कर दे और सीमा से बाहर निकलने लगे तो अल्लाह तआला की पकड़ की सिफत भी काम करती है। और फिर अगर अल्लाह तआला चाहे इस दुनिया में भी पकड़ता है और अगले जहान में भी सज़ा है।

लेकिन किसी की बुराई देखकर उस को फैलाना बहरहाल मना है क्योंकि इस से बुराईयां बजाय समाप्त होने के फैलती हैं इस बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फरमान हमेशा याद रखना चाहिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यदि लोगों की कमज़ोरियों के पीछे पड़ेगा तो उन्हें बिगाड़ देगा।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल अदब हदीस 4888)

कमज़ोरियों के पीछे पड़ने का अर्थ है कि उन्हें जगह जगह वर्णन करना जिज्ञासा करके उनकी कमज़ोरियों की खोज करना। अगर इंसान इस तरह करे तो उन को बिगाड़ देगा और समाज की शांति भी ख़राब होगी और फिर ये बातें जब जगह जगह लोगों में वर्णन की जाऐंगी तो ऐसे लोग जिनकी यह बुराईयां हैं बजाय सुधार के उनमें ज़िद पैदा हो जाती है और फिर ज़िद में आकर वह दूसरों को भी अपने जैसा बनाने की कोशिश करते हैं अपने क्षेत्र का विस्तार करते जाते हैं। शर्म समाप्त हो जाती है और जब शर्म समाप्त हो जाए तो सुधार का पहलू भी समाप्त हो जाता है।

अत: यहाँ मैं उन लोगों को भी ध्यान दिलाना चाहता हूं जिनके ज़िम्मा जमाअत के काम भी हैं, विशेष रूप से सुधार करने वाले विभाग को अत्यंत सावधानी से और सहानुभूति रखते हुए सुधार का काम करना है। कभी किसी भी व्यक्ति को यह एहसास नहीं होना चाहिए कि मेरी कमज़ोरी अमुक ओहदेदार के कारण प्रकट हुई। लोगों को पता लगा। अगर यह भावना पैदा हो तो उसकी प्रतिक्रिया बहुत अधिक सख्त होती है। ऐसे लोग जिनके ज़िम्मा सुधार का काम है वह जहां लोगों की बुराई को फैला करके समाज में बिगाड़ पैदा कर रहे हैं वहाँ अल्लाह तआला की नाराज़गी भी मोल ले रहे होते हैं। अल्लाह तआला फरमाएगा। मैंने तो तुम्हें जमाअत की सेवा का मौका दिया था इसलिए मेरी गुणों को अधिकतम अपनाओ लेकिन यहाँ तो तुम मेरे सत्तार के गुण से उलट चलकर बेचैनियां और शरारत पैदा करने का कारण बन रहे हो। अल्लाह तआला सत्तारी को कितना पसंद करता है और सत्तारी करने वाले वाले को कितना सम्मानित करता है इस बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फरमाया कि मुसलमान मुसलमान का भाई है वह उस पर अत्याचार नहीं करता और न उसे अकेला छोड़ता है। मुसलमानों का यह कितना दुर्भाग्य है कि आजकल हम देखते हैं कि सबसे अधिक मुसलमान हैं जो मुसलमानों पर अत्याचार कर रहे हैं एक दूसरे की गर्दनें काट रहे हैं और कोई नहीं जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद पर ध्यान दे। बहरहाल फिर भी आप ने यह भी फरमाया कि जो व्यक्ति अपने भाई की आवश्यकता को पूरा करने में लगा रहता है अल्लाह तआला उसकी ज़रूरतों को पूरा करता है और जिसने किसी मुसलमान की तकलीफ दूर की अल्लाह तआला क़यामत के दिन दु:खों में से एक मुसीबत कम कर देगा और जो किसी मुसलमान की सत्तारी करता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उस की सत्तारी करेगा।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल मज़ालिम हदीस 2442)

अत: उस रहीम और दयालु ख़ुदा के रहम और दया को ग्रहण करने के लिए सत्तारी और छुपाना बेहद ज़रूरी है।

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी एक अवसर पर फरमाया कि कोई बंदा दूसरे बन्दा की इस दुनिया में बुराई नहीं छुपाता लेकिन अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसकी बुराई छुपाएगा। (सहीह मुस्लिम किताबुल बिर्रे वस्सिला हदीस 6595) अर्थात अल्लाह तआला बुराई छुपाने वाले को बिना इनाम के नहीं छोड़ता। किसी ने अगर अल्लाह तआला के किसी बंदे की बुराई छुपाई तो फिर वह उस के खाते में लिखी गई। उस के हिसाब में लिखी गई मेरे बन्दा ने यह नेक काम किया और क़यामत के दिन वह फिर उसका इनाम पाएगा। अल्लाह तआला इससे अनदेखी करेगा बल्कि अल्लाह तआला तो अपने बन्दा पर इस हद तक दयालु है अपनी रहमत का इतना साया डालता हैं कि एक रिवायत में आता है कि वह बन्दा से पूछेगा कि अमुक काम तूने किया था तो बंदा कहेगा हाँ, मेरे रब्ब मैंने क्या है या क्या था। उस पर अल्लाह तआला फरमाएगा मैंने इस दुनिया में तेरी कमज़ोरियों को छुपाया की दुनिया को पता नहीं चला कि अगर गलत काम किए अब आज कयामत के दिन भी मैं तेरी बुराइयों को छुपाता हूँ और तुझे माफ करता हूं।

(सहीह बुख़ारी किताबुल मज़ालिम हदीस 2441)

तो अल्लाह तआला तो ऐसे बन्दा से व्यवहार करता है। तो अगर हम ने अल्लाह तआला की सिफत सत्तारी से लाभ उठाना है तो ख़ुद भी दूसरों की सत्तारी की ज़रूरत है। किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि मैं बुराइयों से मुक्त हूँ और दूसरे में

बुराईयां हैं। यह अल्लाह तआला की कृपा है जिसने हमारे सत्तारी की हुई है।

अत: जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फरमाया हमें इस बात को हमेशा सामने रखना चाहिए फरमाया कि "वास्तव में इंसान की ख़ुदा तआला बुराइयों को छुपाता है क्योंकि वह सत्तार है।" (बहुत से लोगों को ख़ुदा तआला की सत्तारी ने ही नेक बना रखा है।) "अन्यथा यदि ख़ुदा तआला बुराइयों को न छुपाए तो पता लग जावे कि इंसान में क्या क्या गंद छुपे हैं।"

अत: यह है वह बात जिसे हमेशा सामने रखनी चाहिए और इस बात को सामने रखते हुए जहां व्यक्ति इस्तिग़फार करे, और अल्लाह तआला से इस्तिग़फार करते हुए अल्लाह तआला की मग़फरत की चादर में लिपटने की कोशिश करे, इससे माफी मांगे वहाँ अपने पर नज़र रखते हुए दूसरों की कमज़ोरियों को भी अनदेखा करे। अपने गिरेबान में देखे और दूसरों की कमज़ोरियों को बाहर निकालने की कोशिश न करे बल्कि पहले अपनी समीक्षा करे कि मैं क्या हूँ और हमेशा यह सोचे कि जिस तरह अल्लाह तआला ने मेरी बुराइयों को छुपाया है तो इसी तरह मैंने दूसरों की बुराइयों को छुपाना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर फरमाते हैं कि

"मनुष्य के ईमान का कमाल यही है कि अल्लाह तआला के गुणों को धारण करे अर्थात जो जो गुण और विशेषताएं ख़ुदा तआला में हैं उनको यथा सम्भव अनुसरण करे और अपने आप को ख़ुदा तआला के रंग में रंगने की कोशिश करे।" फरमाया कि "जैसे ख़ुदा तआला में अफ़ो (क्षमा) है आदमी भी अफ़ो करे।" दूसरों को माफ करने की आदत डाले। "दया है नम्रता है उपकार है, आदमी भी रहम करे, नम्रता करे लोगों पर उपकार करे।" फरमाया "ख़ुदा तआला सत्तार है आदमी को भी सत्तारी की शान से भाग लेना चाहिए और अपने भाइयों के दोष और बुराइयों को छुपाना चाहिए।" (बुराइयों और गुनाहों को छुपाना चाहिए।) फरमाया कि "कुछ लोगों की आदत होती है कि जब किसी की बुराई या त्रुटि देखते हैं जब तक उस को यह अच्छी तरह फैला न लें "(इसे प्रसार न कर दें) "उन्हें खाना हज़म नहीं होता।" फरमाया "हदीस में आया है कि जो अपने भाई के दोष छुपाता है ख़ुदा तआला उसकी बुराइयों को छुपाता है। मनुष्य को चाहिए कि निर्लज्ज न हो, अभद्रता न करे, जीव से दुर्व्यवहार न करे,मुहब्बत और नेकी से व्यवहार करे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 339-340 प्रकाशन 1985 ई यू के)

एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मजलिस में किसी की कमज़ोरियों का उल्लेख हुआ कि (अमुक व्यक्ति में यह यह कमज़ोरी है) तो आप ने इस (बात को सुनकर) बात करने वाले को संबोधित कर के फरमाया कि इस के दोष तो (तुम) ने बयान कर दिए हैं" (बड़े जोश उसकी कमजोरियों को तुम वर्णन कर रहे हो) इस की कमज़ोरियां तो तुम ने गिनवा दीं। अच्छा होता अगर उसकी अच्छाइयों का भी जिक्र किया होता। (उद्धरित ज़िक्रे हबीब पृश्ठ 57)

आख़िर इसमें कुछ खूबियां भी तो होंगी उनका भी तो ज़िक्र करते। अत: समाज की बुराइयों को दूर करने और शांति, प्यार और मुहब्बत का प्रसार करने के लिए आवश्यक है कि बुराइयों को छुपाया जाए और अच्छाइयों को प्रकट किया जाए। अच्छाइयों को प्रकट करने से दिखाने से नेकियों की भी तहरीक होती है। एक वास्तविक मुसलमान की भूमिका यही होना चाहिए कि समाज में नेकियाँ फैलाए। केवल ज़बान के मज़ा और अस्थायी बनावटी ख़ुशी के लिए या ख़ुशी का माहौल बनाने के लिए दूसरों की बुराइयों को फैलाना बहुत बड़ा गुनाह है। मजलिस में एक मज़ाक़ का रंग पैदा कर के लोगों का मज़ाक करना यह बहुत बड़ा गुनाह है जिस से हर अहमदी को बचना चाहिए। हम ने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर यह बैअत का वादा किया है कि किसी तरह से मानव जाति को कष्ट नहीं देना न हाथ से न जीभ तो इस की पाबन्दी करनी चाहिए।

(उद्धरित इज़ाला औहाम पृष्ठ 564)

ज़बान के घाव बड़ी देर तक रहते हैं। लोगों का उपहास उनकी बुराइयों को प्रकट करना इस के प्रभाव कई बार हमेशा रहते हैं। इसलिए हमें बहुत सावधानी की ज़रूरत है और सच्ची सहानुभूति और ख़ैरख्वाही अपने भाई के लिए हमारे दिल में होनी चाहिए और सच्ची सहानुभूति और खैरख्वाही व्यक्त तभी हो सकती है जब अपने भाइयों की कमज़ोरियों पर पर्दा डाला जाए। उनकी बातों को प्रकट करना कभी न मज़ाक़ में न गंभीरता से की जाए। हाँ किसी की कमज़ोरी को देखकर सच्ची सहानुभूति का निहित है कि उस के सुधार की कोशिश की जाए ताकि वे बुराई या कमज़ोरी व्यक्ति से ख़त्म हो जाए और अगर इस बुराई का माहौल पर प्रभाव स्थापित हो सकता है या बुरे प्रभाव पड़ सकते हैं तो फिर माहौल को भी बचाया जा सके और यही नेकी है और अल्लाह तआला के फज़ल को ग्रहण करने वाली है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस संबंध में हम क्या देखना चाहते हैं। आप फरमाते हैं कि

"चाहिए कि जैसे कि जिसे कमज़ोर पाए उसे गुप्त रूप से नसीहत करे।" (चुपचाप अलग होकर उसे नसीहत करो।) "अगर न माने तो उसके लिए दुआ करो।" (नसीहत करो मान ले तो ठीक। नहीं मानता तो उसके लिए दुआ करो।) "और अगर दोनों बातों से लाभ न हो।" (न नसीहत से लाभ हुआ न दुआ से लाभ हुआ तो फिर क्या करना है। फरमाया कि "फिर इसे कज़ा कदर का मामला समझे।" (यह समझो बस यही अल्लाह तआला की इच्छा है।) "जब ख़ुदा तआला ने उन्हें स्वीकार किया हुआ है तो आप को चाहिए कि किसी का दोष देखकर शीघ्र जोश न दिखलाया जाए।" (अल्लाह तआला ने उसे स्वीकार किया यह तौफ़ीक़ दी कि उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया, जमाअत में शामिल किया इस बुराई के कारण से उसकी जितनी बदनामी तुम्हारे विचार में होनी चाहिए थी वह नहीं हो रही। और किसी रूप में उसकी बुराई छुपी हुई है। उसका केवल तुम को ही पता चला है तो तुम्हें भी कोई ज़रूरत नहीं जोश दिखाने की चुपचाप बैठे रहो। अल्लाह तआला ख़ुद ही उस के सुधार का कोई माध्यम बनाएगा) फरमाया कि "संभव है कि वह किसी समय सुधर जाए।" अत: इससे पता लगता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निकट किसी का अहमदी होना और आप की बैअत में आना यह दिखाता है कि अल्लाह तआला ने उसे स्वीकार कर लिया है और जब अल्लाह तआला ने उसे स्वीकार कर लिया है तो किसी दूसरे का हक नहीं बनता कि व्यक्तिगत दोष तलाश करके उन्हें फैलाया जाए। टोह में लगा जाए। जिज्ञासा की जाए और फिर वह बुराईयां फैलाई जाएं या लोगों के सामने उस के बारे में घृणा व्यक्त भी करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया संभव है वह ठीक हो। आप एक जगह बल्कि उसी क्रम में फरमाते हैं कि

"वली और बुज़ुर्गो से भी कई बार दोष हो जाते हैं।" (बड़े बड़े वली और बुज़ुर्ग जो हैं उनसे भी दोष हो जाते हैं) फरमाया कि "बल्कि लिखा है "अलकुत्बो कद यज़नी।" कि वली से भी व्यभिचार हो जाता है" फरमाया "बहुत से चोर और व्यभिचारी अन्त में वली और बुज़ुर्ग बन गए।" आप फरमाते हैं "जल्दी और शीघ्रता से किसी को छोड़ देना हमारा तरीका नहीं।" "किसी का बच्चा खराब हो तो उस के सुधार के लिए अपनी पूरी कोशिश करता है। ऐसे ही अपने किसी भाई को न छोड़ना चाहिए।" (जिस तरह बच्चे के लिए कोशिश करते हो, उसी तरह अपने भाइयों की बुराइयों को दूर करने के लिए भी कोशिश करो। कोशिश भी और दुआ भी) "बल्कि इस के सुधार के लिए पूरी कोशिश करनी चाहिए। फरमाया "कुरआन की यह शिक्षा कदापि नहीं कि दोष देखकर उस का प्रसार करो और दूसरों से चर्चा करते फिरो बल्कि वह फरमाता है تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ(सूरह अल्बल: 18) वे धैर्य और रहम से नसीहत करते हैं" फरमाया कि "मरहमह यही है कि दूसरे के दोष को देखकर उसे समझाया जाए और उसके लिए दुआ की जाए "दुआ में बड़ा प्रभाव है और वह व्यक्ति बहुत ही खेद योग्य है कि उस के दोष का वर्णन तो सौ बार करता है लेकिन दुआ एक बार भी नहीं करता। दोष किसी का उस समय बयान करना चाहिए जब पहले कम से कम चालीस दिन उस के लिए रो-रो कर दुआ की हो।" (वर्णन करने से यह भी मतलब नहीं कि दोष वर्णन करना चाहिए प्रचार की अनुमति मिल गई इसका मतलब यह नहीं है बल्कि इसका अर्थ यह है कि सुधार करने वालों को भी अगर शिकायत करनी है तो पहले अपनी कोशिश और दुआ कर लो फिर शिकायत करो।) आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "..... हमारा यह मतलब नहीं है कि दोष के समर्थक बनो।" (इसका यह मतलब नहीं है कि दोष देखो और उसके समर्थक बन जाते हैं कि बड़ा अच्छा किया इस में दोष हैं और कमज़ोरियां हैं बहुत अच्छा है यह इस का समर्थक नहीं बनना) "बल्कि यह कि प्रसार करना और चुगली न करो।" (इस दोष को देखकर प्रसार न करो। न लोगों के सामने बताओ न पीछे बताओ) "क्योंकि अल्लाह की किताब में जैसा कि आ गया है कि यह गुनाह है कि इस का प्रचार और चुग़ली की जाए।" आप फरमाते हैं कि "शेख़ सादी के दो शिष्य थे एक उनमें तथ्य और मआरिफ़ वर्णन किया करता था" (बड़ा लायक था। उसे ज्ञान अनुग्रह प्राप्त था। बड़े तथ्य और मआरिफ़ वर्णन करता था।) "दूसरा जला भुना करता था" (उसमें इतनी योग्यता नहीं थी। वह उस पर जलता भुनता रहता था अर्थात एक शिष्य तो बड़ा चतुर था दूसरा कम चालाक और जो कम था जैसा कि मैंने कहा वह चतुर के ज्ञान पर जलता कुढ़ता रहता था)

अंत पहले ने सादी से वर्णन किया कि जब मैं कुछ ब्यान करता हूँ तो दूसरा जलता है और ईर्ष्या करता है। (इस पर) शेख़ सादी ने कहा एक ने दोज़ख़ की राह धारण की कि ईर्ष्या की" (एक तो ईर्ष्या कर के दोज़ख़ के पथ पर चल पड़ा) "और तूने द्वैष कर के।" अब यह भी कोई नेकी की बात नहीं जो मुझे बता रहा है। चुग़ली करके तुम भी दोज़ख़ के राह पर चल पड़े। अत: दोनों ही गुनाहगार हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस घटना को बयान फरमा कर फरमाते हैं "…….कि यह सिलसिला चल नहीं सकता जब तक रहम दुआ सत्तारी आपस में प्रेम न हो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 जिल्द 78-79 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

इसलिए एक तरफ तो हम यह प्रतिज्ञा करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हम अपने अंदर शुद्ध परिवर्तन पैदा करने की कोशिश करेंगे दूसरी ओर हम अगर दुनियादारी के माहौल के प्रभाव में आ गए हैं और अल्लाह तआला के गुणों और आदेशों को अपने पर लागू करने की कोशिश नहीं कर रहे तो हम अपने अहद को पूरा न करके गुनाह कर रहे हैं। हम वह नहीं बन रहे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें बनाना चाहते हैं। आप हमें क्या देखना चाहते हैं? यही कि हम आपस में एक दूसरे के लिए रहम पैदा करें। एक दूसरे के लिए दुआ करने वाले हों एक दूसरे की बुराइयां छुपाने वाले हों।

एक अवसर पर आपने फ़रमाया कि "हमारी जमाअत को चाहिए कि किसी भाई का दोष देखकर उसके लिए दुआ करें लेकिन अगर वह दुआ नहीं करते और इस बयान दूर तक चलाते हैं तो गुनाह करते हैं।" फरमाया कि "कौन सा ऐसा दोष है कि दूर नहीं हो सकता इसलिए हमेशा दुआ के माध्यम से दूसरे भाई की मदद करनी चाहिए।"(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 77-78 प्रकाशन 1985 ई यू. के) और जब हम इस तरह एक दूसरे की मदद करेंगे और बजाय एक दूसरे के दोष निकालने और दूसरों की बुराइयां दिखाने के एक दूसरे के लिए दुआ कर रहे होंगे तभी हम वह वास्तविक जमाअत बन सकते हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बनाना चाहते हैं और यही एक वास्तविक मुसलमान की आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अनुसार स्थिति होनी चाहिए और यही हालत है जो हमारे इस्तिग़फार और माफी का माध्यम भी बनती है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की भलाई में आने और उसके फज़्लों को ग्रहण करने के लिए एक दुआ भी सिखाई है जिसे हमें करते रहना चाहिए। दुआ यह है कि

"हे अल्लाह! मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत में भलाई का इच्छुक हों। मौला! मैं तुझ से धर्म व दुनिया, माल और घर बार में अफ़ू और भलाई का इच्छुक हूं। हे अल्लाह मेरी कमज़ोरियों को ढांप दे और मुझे मेरे खौफों से शांति दे। हे अल्लाह! आगे पीछे दाएं से बाएं और ऊपर से ख़ुद ही मेरी रक्षा फरमा और मैं तेरी महानता की शरण चाहता हूँ कि मैं नीचे से किसी छिपी हुई मुसीबत का शिकार हूँ।"

(सुनन अबू दाऊद किताबुल अदब हदीस 5074)

अत: जब यह दुआ हम अपने लिए करें तो दूसरों के लिए भी ऐसी ही भावनाएं रखने वाले हों और जब यह स्थिति हो तो अल्लाह तआला फिर दुआएं स्वीकार भी फरमाता है। अल्लाह तआला करे कि हम उस की ख़ुशी को प्राप्त करने वाले बनें।

नमाज़ के बाद एक नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा जो आदरणीय मलिक सलीम लतीफ साहब वकील सदर जमाअत ननकाना साहिब (पाकिस्तान) का है यह आदरणीय मलिक मुहम्मद शफी साहिब के बेटे थे। 70 साल उनकी उम्र थी। कल 30 मार्च 2017 ई सुबह लगभग 9 बजे घर से अपने बेटे के साथ कचहरी जाते हुए रास्ते में एक अहमदियत के विरोद्धी ने फायरिंग कर के उन्हें शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। शहीद मरहूम के परिवार में अहमदियत का आरम्भ शहीद के स्वर्गीय पिता आदरणीय मुहम्मद शफी साहब के दो मामा हज़रत हाफिज नबी बख्श साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत जमाल दीन साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से हुआ था। उनका संबंध चक सादुल्लाह निकट कादियान से था। स्वर्गीय शहीद के पिता जन्मजात अहमदी थे। विभाजन से पहले ही ननकाना साहिब आकर बसे। शहीद मरहूम 1948 ई में ननकाना साहिब में पैदा हुए। प्रारंभिक शिक्षा ननकाना साहिब में प्राप्त की और लाहौर से एल. एल. बी के बाद 1967 ई से बतौर वकील प्रैक्टिस शुरू की। घटना के अनुसार शहीद मरहूम अपने बेटे मुहम्मद फरहान वकील के साथ सुबह 9 बजे कोर्ट जाने के लिए बाइक पर रवाना हुए उनका बेटा बाइक चला रहा था। वहाँ एक चौक है बाज़ार बेरी वाला उसके पास जब यह पहुंचे तो एक व्यक्ति ने उन्हें रुकने का इशारा किया। मोड़ के कारण मोटरसाइकिल पहले ही अपेक्षाकृत धीमी थी इसी दौरान उक्त व्यक्ति ने अपनी बंदूक से फायर किया जो शहीद मरहूम के दाईं ओर पसली में लगा और पुन: लोड करके फिर पीठ पर फायर दिया शहीद मरहूम बाइक से गिर गए इस दौरान हमलावर ने बेटे पर भी फायर किया जो पुत्र को न लगा उसके बाद भी लगातार शूटिंग की कोशिश करता रहा। उनका बेटा जो वहां मौजूद था वह तो कलमा पढ़ता रहा लेकिन जो लोग निकट खड़े थे किसी ने आगे बढ़ कर रोकने की कोशिश नहीं की। तमाशा देखते रहे क्योंकि फिर उस से फायर गन लोड नहीं हुई फायर नहीं हुए तो उस पर हमलावर फरार हो गया लेकिन इसी दौरान में घायल हालत में शहीद मरहूम शहीद हो चुके थे। शहीद के पिता विभाजन के समय तहसीलदार के रीडर थे जिस की वजह से शहीद स्वर्गीय पिता ने विभाजन के बाद कई अहमदी परिवारों को ननकाना में आबाद किया। उनकी बड़ी मदद की। ननकाना का एक क्षेत्र अहमदियों से आबाद किया जिसका नाम कूचा अहमदिया रखा था। बहरहाल बाद में 1974 ई में जब जमाअत के ख़िलाफ वहाँ कानून पास हुआ तो विरोधियों के दबाव में कूचा अहमदिया नाम फिर गद्दाफी स्ट्रीट रखा गया। शहीद मरहूम को 1977 ई से अपनी शहादत तक सिवाय एक वर्ष बतौर सदर जमाअत ननकाना साहिब सेवा की तौफ़ीक़ मिली। मरहूम असंख्य गुणों के मालिक थे। मिलनसार और आतिथ्य और विशेष रूप से केन्द्र के मेहमानों की सेवा के अतिरिक्त गरीबों से हमदर्दी का गुण स्पष्ट था। हमेशा प्रत्येक की मदद को तैयार रहते। नमाज़ों के लिए पाबन्द और ख़िलाफत से बहुत अधिक लगाव था। निडर और साहसी व्यक्ति थे। जमाअत के लोगों के साथ उन्हें भी गंभीर प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। 1989 में अधिकतर अहमदी घरानों को विरोधियों ने जला दिया और लूट लिया जिसमें शहीद स्वर्गीय का घर भी शामिल था। इन सभी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद आप हमेशा दृढ़ रहे और विरोधियों का बहादुरी से मुकाबला करते रहे। 2010 ई में स्थानीय अहमदिया मस्जिद के निर्माण में उन्हें भरपूर सेवा की तौफ़ीक़ मिली। शहीद स्वर्गीय की पत्नी को भी लंबा समय सदर लजना के रूप में सेवा की तौफ़ीक़ मिली। कुछ साल पहले उनकी मृत्यु हो गई थी। शहीद स्वर्गीय के ससुर मलक मोहम्मद दीन साहिब मरहूम थे जो जमाअत के प्रसिद्ध मुकदमा साहीवाल में नामित थे और कैद के दौरान ही जेल में वफात पा गए थे। शहीद मरहूम के पीछे रहने वालों में दो बेटे मलक ओवैस जो सिविल जज लाहौर हैं और मोहम्मद फरहान वकील हैं इस वक्त वहाँ ख़ुद्दामुल अहमदिया के कायद भी हैं और एक बेटी डॉक्टर समरह वकार साहिबा जो लाहौर में हैं। और उनके तीन भाई और तीन बहनें हैं। एक भाई मलिक मुहम्मद नसीम साहब यहीं लंदन में हैं। शहीद स्वर्गीय के पिता और डॉक्टर अब्दुस साहब की मां की आपस में रिश्तेदारी भी थी। शहीद मरहूम और उनके परिवार की इच्छा के मद्देनजर उनके पैतृक क्षेत्र साहीवाल में उनको दफन किया गया।

अल्लाह तआला शहीद के स्तर बढ़ाए और उनकी औलाद को भी उनके नक्शे कदम पर चलाए नेकियों में आगे बढ़ाता चला जाए और अहमदियत के विरोधियों और दुश्मनों के भी जल्द पकड़ जाने के साधन पैदा करे।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी

जी.एम. मुहम्मद शरीफ़

जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

प्रैस रिलीज़

" अहमदिया मुस्लिम जमाअत द्वारा जर्मनी में निर्माणित 50वीं मस्जिद का भव्य उद्घाटन।"

"एक वास्तविक मुसलमान का परम कर्तव्य है कि वह प्रत्येक धर्म के आराधनालय का सम्मान एवं सुरक्षा करे चाहे वे चर्च हों या मन्दिर।"

(मिर्ज़ा मसरूर अहमद)

विश्वव्यापी अहमदिया मुस्लिम जमाअत के पाँचवें रूहानी ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब इन दिनों जर्मनी की यात्रा पर हैं। अपनी इस यात्रा के दौरान आप ने 10,अप्रैल 2017 ई को जर्मनी के शहर वाल्देष्ट में बैतुल आफ़ियत नामक मस्जिद का इसी प्रकार अगले दिन 11, अप्रैल को शहर आक्ज़बर्ग में मस्जिद बैतुल नसीर का दुआ के साथ भव्य उद्घाटन किया। इसके बाद उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। जिस में शहर के अनेक लोग सम्मिलित हुए। इस समारोह में हुज़ूर अनवर ने उपदेश देते हुए बताया कि इस्लाम धर्म मानवता की सेवा हेतु अपने निजी मतभेद को दूर रखते हुए आपसी सद्भाव, शन्ति, मुहब्बत के साथ रहने की शिक्षा देता है। हमारा यह विश्वास है कि अल्लाह तआला ने प्रत्येक कौम एवं जाति में अपने अवतार अवतरित किए हैं हम उन समस्त अवतारों का आदर एवं सत्कार करते हुए उनकी सच्चाई को स्वीकार करते हैं क्योंकि वे समस्त ख़ुदा की ओर से आए थे फिर यह किस प्रकार संभव है कि वह सब धर्मों एवं उसके मानने वालों में मतभेद चाहता हो।

इसी प्रकार आपने फ़रमाया

"इस्लामी शिक्षा अनुसार प्रत्येक वास्तविक मुसलमान का परम कर्तव्य है कि वह प्रत्येक धर्म के आराधनालय (इबादत का स्थान) का सम्मान एवं सुरक्षा के लिए हर समय तैयार रहे चाहे वे चर्च हों या मन्दिर। एक मुसलमान का परम कर्तव्य है कि वह समाज में विभिन्न धर्मों के लोगों के साथ सद्भाव एवं प्रेम के साथ रहे और उनके साथ हर प्रकार से हमदर्दी का बर्ताव करे। इस्लाम धर्म सदैव समाज में एकता, सम्मान एवं मुहब्बत को बढ़ाने पर बल देता है।"

हुज़ूर ने फ़रमाया।

"इससे पहले इस स्थान पर एक बाज़ार था जहाँ लोग अपनी आवश्यकताओं की सामग्री खरीदने के लिए आते थे। अब भविष्य में भी लोग यहाँ संसारिक वस्तुएं खरीदने के लिए नहीं बल्कि ख़ुदा तआला की इबादत द्वारा आध्यात्मिक खज़ानों से तृप्त होने के लिए आएंगे। हम इस मस्जिद का उपयोग एक ऐसे स्थान के रूप में करेंगे जहाँ पर लोग मानवता की सेवा हेतु एकत्रित होंगे।"

विश्व भर में आतंकवाद द्वारा हो रही घटनाओं का वर्णन करते हुए आपने फ़रमाया।

"आतंकवादी एवं आतंकवाद से जुड़े संगठन केवल अपने स्वार्थ एवं विश्व भर में नफरतें फैलाने हेतु ग़लत रंग में इस्लाम के नाम का उपयोग करते हैं और उनको रोकने के लिए जो भी कोई उनके समक्ष आता है वे उसको मार रहे हैं इस कारण विश्व में अमन की स्थापना बहुत आवश्यक है और जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का आदर्श वाक्य "मुहब्बत सब से नफ़रत किसी से नहीं "के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार मस्जिद बैतुल नसीर के उद्घाटन के अवसर पर आपने अल्लाह तआला के अधिकार एवं लोगों के अधिकार देने की ओर ध्यान दिलाते हुए फरमाया।

"पवित्र क़ुरआन ने मुसलमानों को यह सिखाया है कि जहाँ एक तरफ़ ख़ुदा तआला की इबादत करना आवश्यक है उसी प्रकार दूसरी ओर उच्च चरित्र द्वारा मानवता की सेवा करना और दूसरों की सहायता करना भी उसका परम कर्तव्य है इसलिए जहाँ भी किसी मस्जिद का निर्माण होता है उसका यही उद्देश्य एवं लक्ष्य है की इसमें ख़ुदा तआला की इबादत के साथ साथ लोग मानवता की सेवा के लिए भी जमा हों।"

अंत में हुज़ूर ने फ़रमाया।

"मैं उम्मीद करता हूँ की इस मस्जिद के निर्माण से यहाँ के स्थानीय अहमदी अपनी इबादतों की गुणवत्ता को बढ़ाएंगे और इसके साथ-साथ अपने पड़ोसियों की सेवा एवं उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यथा संभव प्रयास करेंगे।

अंत में दुआ के साथ इन आयोजनों का समापन हुआ।

(प्रैस विभाग)

☆ ☆ ☆

123 वां
जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अः, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

ज़ैली तंज़ीमों के सालाना इज्तिमा 2017 ई की तारीखों की घोषणा

सारे भारत के ख़ुद्दाम तथा अत्फाल के लिए एलान किया जाता है कि

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने कादियान दारुल अमान में सालाना इज्तिमा मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया तथा मजलिस अत्फालुल अहमदिया भारत 2017 ई के आयोजन के लिए दिनांक 13-14-15 अक्तूबर 2017 ई(शुक्रवार, शनिवार, रविवार) की मंजूरी प्रदान की है। समस्त ज़िला, क्षेत्रीय स्थानीय कायदीन को विशेष रूप से कहा जाता है कि सालाना इज्तिमा में होने वाले प्रोग्राम के अनुसार स्थानीय, ज़िला तथा क्षेत्रीय इज्तिमा आयोजित करें और अधिक से अधिक ख़ुद्दाम तथा अत्फाल को इन में शामिल करने की कोशिश करें।

इस के अनुसार ख़ुद्दाम भरपूर तय्यारी करें। सारे ख़ुद्दाम तथा अत्फाल से निवेदन है कि अभी से इज्तिमा की तैय्यारी शुरू कर दें। अल्लाह तआला आप के साथ हो

(सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वे कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बंधित कर देते तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह और की जान की शिरा काट देते ।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे प्राय: उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित किया गया है। किताब प्राप्त करने के लिए इच्छुक पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 4 May 2017 Issue No. 18

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91-1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

असहाबे अहमद

हज़रत नूर मोहम्मद साहब की कुछ रिवायतें

हज़रत हाफिज़ नूर मुहम्मद साहब फ़ैज़ुल्लाह चक ज़िला गुरदासपुर के रहने वाले थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सेवा में 1883-84 ई के निकट उपस्थित हुए। आप हाफिज़े कुरआन थे। अल्लाह तआला अपने फज़ल से कश्फ और इल्हाम की बरकत से भी पर्याप्त हिस्सा दिया। हज़रत हाफिज़ साहिब अपने तक्वा ईमानदारी और श्रद्धा व बैअत में एक सम्माननीय बुज़ुर्ग थे। आप कुछ रिवायतें पेश हैं

कुरआन शरीफ से बढ़कर कौन सा वज़ीफा है

हज़रत हाफिज नूर साहिब बयान फरमाते हैं कि (एक बार) हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि दुआ करके सोना। हाफिज नबी बख्श साहिब (जो हकीम मौलवी फज़ल रहमान साहिब मुरब्बी अफ्रीका के पिता हैं) मेरे साथ थे। उन्होंने हंस कर कहा " यह बड़ा वज़ीफा करते हैं। "

मैंने कहा मैं तो कोई वज़ीफा नहीं करता केवल कुरआन शरीफ ही पढ़ता हूँ। तो हज़रत साहिब अलैहिस्सलाम मुस्कुरा कर फरमाने लगे "नूर मोहम्मद तुम्हारा उदाहरण तो यह है कि किसी व्यक्ति ने किसी को कहा कि केवल पलाऊ ही खाता हूं। पलाव से बढ़कर और क्या खाना चाहिए। " फिर आपने फरमाया " कुरआन शरीफ से बढ़कर और कौन सा वज़ीफा है।"

वलहान नामक शैतान

इसी ज़माने में हज़रत साहब असर के बाद टहलने के लिए जाया करते थे। हम दो तीन व्यक्ति साथ थे एक दिन गांव बुटर के रास्ते (वह मार्ग जो दारुल उलूम और दारुर्रहमत कादियान के बीच है। इरफानी) की तरफ सैर को गए। मौलवी अब्दुल लहक साहब पटयालवी भी साथ थे और मदरसा तालीमुल इस्लाम के रास्ते में जो कच्चा तालाब आता है वहाँ वुज़ू करने लगे तो हज़रत अलैहिस्सलाम ने मौलवी अब्दुल हक साहिब (जिन्हें वुज़ू करते समय पवित्रता में संदेह रहता था) को फरमाया कि " मौलवी अब्दुल हक " इस तरह वुज़ू करो " और आप ने वुज़ू करके बतलाया और तीन बार से अधिक न करो। आप ने कहा कि " एक बुजुर्ग थे उन्हें वुज़ू में बहुत भ्रम रहता था..उन्होंने वुज़ू में कई मश्कें खर्च कर दीं। फिर भी तसल्ली न हुई। फिर एक नदी पर चले गए और उसके अंदर प्रवेश कर के वुज़ू करने लगे। आप का एक मुरीद था उसने कहा कि हज़रत ज़ुहर का समय चला गया है। अब असर का समय आ गया है तो कहने लगे कि तसल्ली तो नहीं हुई मगर ख़ैर नमाज़ पढ़ लेते हैं।"

फरमाया कि " वुज़ू में शंका डालने वाला एक शैतान है जिसका नाम वलहान है वह हमेशा शंका डालकर नमाज़ से वंचित कर देता है। "

रेवड़ियां

आरंभ समय में जब हम आते थे तो हाफिज नबी बख्श साहिब ने एक दिन मेरे बारे में कहा कि हुज़ूर हाफिज़ साहिब का मीठा खाने को दिल चाहता है। हुज़ूर ने एक सेवक अहमद बेग को कहा कि "जाओ कड़ा के रेवड़ियां लाओ।''

अत: वह ले आया। आप भी खाते थे और हमें भी खिलाते थे।

जो मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कहे वह करो

हज़रत हाफिज नूर मुहम्मद साहब कहते हैं कि " मैं उस समय जवान था मगर मेरी कमर और टाँगों में दर्द था। मैंने आप (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) से उल्लेख किया। आप अपने पुराने घर से सूंठ, गुड़ और घी डाल कर "संडहोला" बनवा कर लाए और कहा कि उसे खाया करो और फिर कहा कि "अयार जफीकरा" (एक दवा का नाम है) खाया करो आप ने बड़ी प्रशंसा की बलग़मी स्वभाव के लोगों के लिए बहुत अच्छी दवा है।

एक बार मेरी कमर में दर्द था और मुझे बहुत तकलीफ थी। ऐसी हालत में मैंने सपना में देखा कि कोई व्यक्ति कहता है "जो मिर्ज़ा गुलाम अहमद कहे वह करो। " मैंने यह सपना हज़रत ख़लीफा अव्वल के सामने बयान की। वह मुझे हाथ से पकड़ कर मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास ले गए यही सपना मैंने वहाँ वर्णन किया। आपने फरमाया। " मुर्गी का अंडा आधा गर्म करके खा लो। "

☆ ☆ ☆

अच्छे स्वास्थ्य के लिए पानी की ज़रूरत और उपयोगिता

जीवन और स्वास्थ्य रखने के लिए ऑक्सीजन के बाद सबसे जरूरी चीज पानी है- तंदरुस्ती को बनाए रखने के लिए हमें साफ तथा स्वच्छ हवा की तरह साफ और शुद्ध पानी की ज़रूरत है- जिस तरह गंदी हवा में सांस लेने से हम बीमार पड़ जाते हैं- इसी तरह गंदे पानी से भी हमारा स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। आमाशय और आंत्र की विभिन्न बीमारियां पैदा हो जाती हैं। बदहज़मी हो जाती है, दस्त आने लगते हैं, पेचिश हो जाती है। कभी कभी पानी में ख़तरनाक और घातक महामारी रोगों के कीटाणुओं के मिलने के कारण होती है। गन्दा पानी पीने से व्यक्ति को टाईफ़ाइड और हैज़ा जैसे संक्रामक रोग हो जाते हैं।

शुद्ध और साफ पानी जीवन के लिए एक बहुत ज़रूरी चीज़ है। यह हमारे आहार और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक घटक हैं। यह हमारे शरीर की बनावट में सत्तर प्रतिशत के पास पाया जाता है पानी का उपयोग अन्य ख़ुराकों के साथ इसलिए आवश्यक है यह आहार रकीक बनाकर पचा सक्षम बनाता है और उसे तरल रूप में रखता है। यह अन्य खाद्य सामग्री बारीक बारीक नसों में पहुंचाती है। यह अपशिष्ट को बारीक बनाकर पेशाब तथा पाखाने और पसीने के रास्ते उत्सर्जित कर सुविधा प्रदान करती है। इसी कारण रक्त चाप स्थापित है। पानी की तासीर ठंडी है। यह प्यास बुझाता, बेहोशी ,थकान, हिचकी, उल्टी और कब्ज़ को दूर करता है। पेशाब की जलन में उपयोगी है। शरीर के ज़हरों को पेशाब और पसीने के रास्ते बाहर करता है। खाद्य पचाने में मदद करता है और रक्त गाढ़ा या ख़राब होने से सुरक्षित रखता है।

पानी हमेशा साफ और मैल से मुक्त पीना चाहिए। भोजन के दौरान बहुत कम मात्रा में पीना चाहिए। खाने के एक दो घंटे बाद पर्याप्त मात्रा में पी सकते हैं। सुबह निहार मुंह पानी पीना बेहद उपयोगी है।

डाक्टर इस बात पर सहमत हैं कि सुबह खाली पेट पानी पीना कई बीमारियों से सुरक्षित रखता है। खाने के बीच में मामूली मात्रा में और खाना खाने के दो घंटे बाद पर्याप्त मात्रा में पानी पीना पाचन के काम को मजबूत करता है और इस प्रकार भोजन की शक्ति प्रदान करने वाली सामग्री शरीर का घटक होकर हमारे स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं। खाना खाने से पहले और तुरंत बाद पानी पीने से शक्ति तंत्र कमजोर और शक्ति कम हो जाती है। शरीर फूलने लगता है, लेकिन भोजन के दौरान एक एक दो दो घूंट पानी पीने से खाना जल्दी हज़म हो जाता है लेकिन इसमें भी बीच की राह अनिवार्य है।

जिन लोगों को प्राय कब्ज़ की शिकायत रहती हो। उन्हें खाने के बीच में दो-दो तीन घूंट पानी पीते रहना चाहिए और खाने के एक घंटे बाद ख़ूब पानी पीना चाहिए इसके अतरिक्ति सुबह खाली पेट एक गिलास पानी पीना कब्ज़ को दूर करता है

पानी का सबसे महत्त्वपूर्ण काम यह है कि यह रक्त को गाढ़ा या शुष्क होने से बचाता है जब दिल की धड़कन के साथ रक्त एक निश्चित मात्रा में शरीर की नस और रग रग में उठता है इसलिए व्यायाम और गर्मी से गाढ़ा होता रहता और इसमें शरीर के मैल आदि शामिल होते रहते हैं। इसलिए इसे गाढ़ा होने से बचाने और मेल साफ करने के लिए पानी की पर्याप्त मात्रा शामिल होनी चाहिए। इसके अलावा पानी शरीर के अंदर की गंदगी को साफ करता है हम जो पानी पीते हैं वे शरीर के विषाक्त पदार्थों को अवशोषित करके पेशाब और पसीने के रास्ते नष्ट कर देता है। जाहिर है कि अगर पानी न हो या इसका उपयोग बहुत ही कम किया जाए तो यह सब गंदगी शरीर के अंदर ही रहेंगी और इस तरह एक स्वस्थ शरीर बीमार हो जाएगा।

घायल लोगों को हमेशा प्यास अधिक लगती है। इसका कारण यही है कि उनके शरीर का बहुत सा खून निकल जाने के कारण शरीर की ज़रूरत होती है कि कोई तरल वस्तु अंदर पहुंचे तो खून आसानी से दौड़ सके।

बुख़ार की हालत में भी प्यास अधिक होती है। क्योंकि बुख़ार की गर्मी ख़ून से पानी के बहुत बड़े हिस्से को भाप गना कर उड़ा देता है। दस्त और हैज़ा आदि भी ऐसी बीमारियां हैं जिनमें रक्त का द्रव हिस्सा काफी मात्रा में ख़ारिज होता है और रक्त बनाए रखने के लिए पानी की ज़रूरत होती है। ऐसी परिस्थितियों में अगर पानी उपलब्ध न हो तो प्राय रोगी अपनी बीमारी के कारण से नहीं बल्कि पानी की कमी के कारण जान दे देते हैं। इसके अतिरक्ति शरीर से रोग के ज़हर या जीवों को बाहर निकालने के लिए भी पानी की ज़रूरत होती है। हैज़े में बड़ी इलायची के छलकों में उबला हुआ पानी उपयोगी है।

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad